शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक नेतृत्व की अनिवार्य बातें
अगुवों की पुस्तिका

मसीही सिद्धान्त

अध्याय 1: हमें सिद्धान्त को जानने की क्या जरूरत है?

परिचय

यह अध्याय मसीही सिद्धान्त नामक शीर्षक वाले मॉड्यूल शिष्यत्व की अनिवार्य बातों का भाग है। अध्यायों की इस श्रंखला में उन सिद्धान्तों की जाँच की गई है जो हमारे विश्वास के आधार हैं और इस बात पर बल दिया गया है कि त्रुटिपूर्ण सिद्धान्त किस प्रकार हमारे सत्य विश्वास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। सिद्धान्त हमारे विचारों का एक समूह है जो हमारे विश्वास के व्यवहार को निर्धारित करता है। मसीहियों के लिए परमेश्वर के स्वभाव और उद्धार के बारे में सही सिद्धान्त को समझना निर्णायक है, विशेषतः यदि वे सिखाने और चेले बनाने के काम में संलग्न हैं। इस मॉड्यूल में मसीही कलीसिया के कुछ मुख्य सिद्धान्तों से संबंधित वचनों के साथ–साथ प्रत्येक सिद्धान्त से जुड़े असमंजस एवं त्रुटि के क्षेत्रों की जाँच की गई है।

इच्छित श्रोता

इन अध्यायों के इच्छित श्रोता वे मसीही हैं जो अपने विश्वास में परिपक्व हो रहे हैं और ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं। इन अध्यायों से उन कलीसियाई अगुवों को भी लाभ होगा जो लोगों को मसीही सेवा के लिए प्रोत्साहन देना चाहते हैं और अपने प्रशिक्षुओं के आत्मिक वरदानों की पहचान करना चाहते हैं।

अगुवों की पुस्तिका एक अगुवे के रूप में आपकी तैयारी में सहायता करने के लिए है। इन अध्याय रूपरेखाओं का प्रयोग www.dehindi.org पर उपलब्ध शिष्यत्व अनिवार्य कार्यक्रम की अन्य सामग्रियों के साथ किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

मसीही सिद्धान्त

अध्याय 1: हमें सिद्धान्त को जानने की क्या जरूरत है?

उद्देश्य

यह अध्याय मसीही विश्वास के लिए सिद्धान्त के महत्व और इस बात पर नजर डालता है कि कैसे त्रुटियों का परिणाम विनाशकारी हो सकता है।

अगुवों के लिए टिप्पणी

ऐसा प्रतीत हो सकता है कि सिद्धान्त केवल सबसे विकसित मसीहियों के लिए अध्ययन का एक क्षेत्र है। परन्तु वास्तव में यह कुछ ऐसा है जिसे प्रत्येक विश्वासी को समझना चाहिए, चाहे वह अपनी विश्वास की यात्रा में कहीं भी क्यों न हो! इस बिन्दू पर आपके भागीदारों का ज्ञान अलग–अलग स्तरों का होगा। ये अध्याय अपने विश्वास के आधारभूत और सर्वाधिक अनिवार्य सिद्धान्तों को खोजने में उनकी सहायता करेंगे ताकि वे उन्हें दूसरों को सिखा सकें। भागीदार अपने स्वयं के विचारों का मूल्यांकन करेंगे और देखेंगे कि क्या वे गलत हैं। हम जानते हैं कि सही विचार सही कार्यों की ओर ले जाते हैं, इसलिए सिद्धान्त का अध्ययन बहुत ही व्यवहारिक है। झूठा विश्वास हमें त्रुटि और हमारे उद्धार के बारे में असुरक्षा की ओर ले जाता है। अपने जोश का प्रदर्शन करते हुए अपने भागीदारों को इस अध्ययन के प्रति उत्साहित करें!

परिचय

समूह से पूछने के लिए निम्नलिखित में से दो या तीन प्रश्नों को चुनें।

- केवल यही नहीं कि आप क्या विश्वास करते हैं बल्कि यह जानना भी क्यों महत्वपूर्ण है कि आप क्यों इस पर विश्वास करते हैं?
- आपके विश्वास आपको कहाँ से मिले? किसने उन्हें आपको सिखाया और आप कैसे जानते हैं कि वे सही हैं?
- 'सिद्धान्त' शब्द को सुनने पर आपके मन में क्या आता है? क्या आप यह मानते हैं कि प्रत्येक विश्वासी को सिद्धान्तों का अध्ययन करना चाहिए और उनकी जानकारी रखनी चाहिए या फिर यह मानते हैं कि इसकी आवश्यकता केवल उनके लिए है जो विश्वास में दूसरों की अगुवाई करते हैं?
- किस कारण से आप अपने विश्वासों के पुनर्मूल्यांकन के बारे में सोच सकते हैं या किस कारण से मसीही विश्वास के किसी आयाम पर अपने सही विचार पर आपको सन्देह हो सकता है?
- क्या आपने किन्हीं सिद्धान्तों का अध्ययन किया है? क्या आपने कभी यह सवाल किया है कि क्या बाइबल वही सिखाती है जो आपको सिखाया गया है? जब मसीहियत के कुछ आयामों के बारे में इतने सारे लोग असहमत हैं तो आपको यह निश्चय कैसे हो सकता है कि आपके विश्वास सही हैं?

अध्ययन

भागीदारों को निम्नलिखित बिन्दुओं के संबंध में निर्देश दें।

सिखाएँ

- **सिद्धान्त क्या है?** प्रत्येक मसीही सिद्धान्त में संलग्न है चाहे उसे इसकी जानकारी हो या नहीं। कुछ लोग यह सोच सकते हैं कि सिद्धान्त उन लोगों के लिए अध्ययन का एक विशिष्ट पाठ्यक्रम या अभ्यास है जो धर्म को बौद्धिक दृष्टिकोण से देखते हैं। परन्तु, प्रत्येक व्यक्ति का अपना विश्वासों का एक समूह (सिद्धान्त) होता है और इसीलिए यह हम सबके लिए एक महत्वपूर्ण अध्ययन है।

  - **सिद्धान्त सत्यों का एक समूह है जो हमें सिखाया गया है और हम दूसरों को सिखाते हैं।** यह सामान्यतः एक कलीसिया, समूह या संगठन के आधारभूत कथनों का समूह होता है।

    - संसार, स्वयं और परमेश्वर की प्रकृति के बारे में प्रत्येक व्यक्ति का अपना विश्वासों का एक समूह होता है। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति किसी सिद्धान्त को मानता है, चाहे वह कहे कि वह किसी पर विश्वास नहीं करता है।
    - मसीहियों के लिए सिद्धान्त परमेश्वर के वचन, बाइबल से लिया गया है। ये विचार कलीसिया के सन्दर्भ में सिखाए गए हैं और विश्वासी उनके अनुसार जीवन जीते हैं। सिद्धान्त के बिना मसीहियत का कोई अस्तित्व नहीं है। मसीहियत यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर पर विश्वास का व्यवहार है और हमारा विश्वास परमेश्वर के वचन के सत्य को सुनने और उसे मानने से आता है।

  - **सिद्धान्त एक धर्मशास्त्रीय शब्द है:** आज कलीसिया द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कुछ धर्मविज्ञानी शब्द परमेश्वर द्वारा दी गई विचारधारा का वर्णन करने के लिए मनुष्य द्वारा बनाए गए हैं जबकि सिद्धान्त एक धर्मशास्त्रीय शब्द है। नये नियम में, मूल यूनानी शब्द *डिडास्कालिया* है, जिसका अर्थ शिक्षण है। यीशु अपनी शिक्षाओं में परमेश्वर के सही सिद्धान्त और मनुष्यों के छलपूर्ण सिद्धान्त के बीच अन्तर करता है।

    - यीशु ने फरीसियों के सिद्धान्त की निन्दा की क्योंकि वे मनुष्यों की विधियों को परमेश्वर की शिक्षाओं के रूप में सिखाते थे (मरकुस 7:7–9) और परमेश्वर के वचन की स्पष्ट शिक्षा को अस्वीकार करते थे।
    - नये नियम की पत्रियों के बहुत से लेखक विश्वासियों को सही सिद्धान्त (यानि, परमेश्वर के वचन में जो साफ–साफ सिखाया गया है और जिसे कलीसिया सत्य मानती है) को समझने की शिक्षा देते हैं ताकि वे सच्चे और झूठे सिद्धान्त को परखने में समर्थ हो सकें। (तीतुस 1:9; तीतुस 2:1; 1 तिमुथियुस 4:6; इफिसियों 4:14)
    - परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है कि हमें जो सिद्धान्त सिखाया गया है और जिसका कलीसिया के विश्वास के वचनों में अंगीकार किया गया है उनके विपरीत सिद्धान्त से हमें सावधान रहना चाहिए ताकि हम धोखा न खाएँ। (रोमियों 16:17)

  - **सिद्धान्त और कलीसिया:** कुछ लोग यह सोचते हुए सिद्धान्त पर चर्चा से बचते हैं कि इससे कलीसिया केवल विभाजित और कमजोर ही होगी। यह सही है कि सिद्धान्तों पर असहमति लोगों को विभाजित कर सकती है परन्तु सच्चे सिद्धान्त से सारे विश्वासियों में एकता आनी चाहिए।

- विश्वासियों के समूहों के बीच विश्वास और आराधना की रीतियों में अन्तर हो सकता है फिर भी समान सिद्धान्तों को मानने के द्वारा एकता हो सकती है। सिद्धान्त की दो श्रेणियाँ हैं– अनिवार्य सिद्धान्त और सतही सिद्धान्त।
- अनिवार्य सिद्धान्त वे मुख्य विश्वास हैं जिन्हें मानना सारे मसीहियों के लिए आवश्यक है। वे मसीहियत को परिभाषित करते हैं। वे हमें एक बनाते हैं और इस मॉड्यूल के अगले 10 अध्यायों में इनके बारे में बात की गई है।
- सतही सिद्धान्तों के बारे में विविध मसीही समूहों में अन्तर हो सकता है परन्तु फिर भी मुख्य सिद्धान्तों पर वे एक रह सकते हैं। सतही सिद्धान्त मसीही व्यवहार, आराधना शैलियों, या ऐसे मुद्दों से संबंधित हो सकते हैं जिन पर बाइबल की स्पष्टता और ऐतिहासिक उदाहरण के बारे में असहमतियाँ हैं।
- हमें यह अपेक्षा रखनी चाहिए कि सिद्धान्त को चुनौती दी जाएगी और लोग परमेश्वर की शिक्षाओं के सत्य पर सन्देह करेंगे क्योंकि यह लोकप्रिय संस्कृति और स्वार्थी अभिलाषाओं से टकराता है। हमें 2 तिमुथियुस 4:3–4 में इसकी अपेक्षा रखने की चेतावनी दी गई है।
- कलीसिया का कार्य सही सिद्धान्त को सुरक्षित रखना और सत्य को विश्वासियों की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना है। ऐतिहासिक सैद्धान्तिक विश्वासों से भटकना खतरनाक है। परमेश्वर के वचन की जाँच और सही सिद्धान्तों की खोज में कलीसियाई इतिहास के सैंकड़ों वर्ष खर्च किए गए हैं। ऐतिहासिक रूप से स्वीकृत विश्वास से भटकने की दशा में कलीसिया के अन्दर विभाजन हो सकता है।

कार्य:

समूह को 10–15 ऐसे सत्यों को लिखने के लिए कहें जिन पर आपकी कलीसिया या समुदाय के मसीही विश्वास करते हैं। चर्चा करें कि कौन से विश्वास अनिवार्य सिद्धान्त के भाग हैं। फिर उन विश्वासों की पहचान करें जो सतही सिद्धान्तों की श्रेणी में आ सकते हैं। इन्हें किसी बोर्ड, चार्ट या दृश्य माध्यम पर लिखें। फिर भागीदारों से पहचानने के लिए कहें:

1. सारे मसीहियों को एक बनाने वाले सिद्धान्त।
2. जिन सिद्धान्तों के बारे में विभिन्न विचार हैं जो विभाजन की ओर ले जा सकते हैं।

सिखाएँ:

❖ **सिद्धान्त सही विश्वास उत्पन्न करता है।** सिद्धान्त का उद्देश्य हमारे विश्वास को स्वस्थ और सक्रिय बनाए रखना है और यह सदा से मसीहियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। मसीहियत के आरम्भिक दिनों में जब कलीसिया बन रही थी तो प्रेरितों ने यीशु द्वारा सिखाए गए सही सिद्धान्त उन लोगों को सिखाए जो आगे चलकर दूसरों को सिखाने वाले थे। अपनी सेवकाई की शुरूआत में ही प्रेरित पौलुस ने अपने शिष्य तिमुथियुस को यह प्रेरणा देते हुए इफिसुस की कलीसिया की देखभाल करने का निर्देश किया कि "कोई और शिक्षा मत देना।" (1 तिमुथियुस 1:3) जब पौलुस को यह अहसास हो गया कि संभवत: वह फिर इफिसुस में नहीं जा पाएगा तो उसने तिमुथियुस को लिखा और झूठी शिक्षा का खण्डन करने और उस कलीसिया के लोगों की देखभाल करने का निर्देश दिया जहाँ वह सेवा कर रहा था। (1 तिमुथियुस 1:3–7; 4:1–8; 6:3–5, 20–21)

➢ **सही सिद्धान्त को जीना:** तिमुथियुस को उचित शिक्षा को प्रोत्साहन देना था ताकि वह उन लोगों को रोक सके जिनकी शिक्षा सत्य के विरूद्ध थी। पौलुस ने तिमुथियुस को न केवल झूठे

सिद्धान्त से बचने बल्कि सत्य सिद्धान्त को जीने की भी सलाह दी। इसी प्रकार, ये निर्देश आज के मसीहियों के लिए भी निर्णायक हैं। (1 तिमुथियुस 1:3, 10)

- **सही विश्वास:** पौलुस ने तिमुथियुस से केवल यही नहीं कहा कि सिद्धान्त महत्वपूर्ण है परन्तु यूनानी शब्द जिसका अर्थ "स्वस्थ" है, का प्रयोग करते हुए यह भी कहा कि वह "सही" होना चाहिए। यह शब्द बीमारी का विलोम है जो तिमुथियुस को संकेत देता है कि झूठा और गलत सिद्धान्त आत्मिक बीमारी की ओर ले जाता है, आत्मिक स्वास्थ्य को नष्ट करता है। सुसमाचार केवल तभी "सुसमाचार" है जब वह सही, सत्य और जीवन देने वाला समाचार हो। झूठा सिद्धान्त सुसमाचार से उसके अच्छे समाचार को छीन लेता है और फिर वह सुनने वालों के लिए अच्छा और सही नहीं रहता है।

- **सिद्धान्त को समझना आत्मिक स्वास्थ्य की ओर ले जाता है:** मसीहियों के कुछ सर्वाधिक आधारभूत मुद्दे सिद्धान्त से संबंधित हैं। हालांकि हम शायद उन्हें इन अर्थों में न पहचान पाएँ परन्तु हम अक्सर सुसमाचार के सत्य को समझने से चूक जाते हैं या उसे हमारे जीवनों से जोड़ने से चूक जाते हैं कि वह "सही" आत्मिक स्वास्थ्य ला सके।

- **सही विश्वास सही कार्यों की ओर ले जाता है:** फिलिप्पियों के लिए लिखी अपनी पत्री में पौलुस उन्हें सही बातों के बारे में "सोचने" के लिए कहता है। (फिलिप्पियों 4:8) दूसरे शब्दों में, पौलुस हमें बताता है कि सही सोच ही सही कार्य करने की कुंजी है।

- **समझ का बढ़ना विश्वास में बढ़ना है:** संसार हमें बताता है कि शान्ति, स्वास्थ्य और खुशी को बनाए रखने की कुंजी किसी भी बात के बारे में बहुत ज्यादा या ज्यादा गहराई से न सोचना है। दूसरी ओर, मसीहियत हमें बताती है कि हमें सत्य की हमारी समझ में बढ़ने और परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और उसके बारे में हमारे ज्ञान को बढ़ाने के द्वारा स्वतंत्रता मिलती है। हमारा शुद्धिकरण (पवित्र जीवन में उन्नति) सत्य की गहरी समझ से आता है। (यूहन्ना 17:17–19; यूहन्ना 8:31–32; यूहन्ना 14:16–17)

- इस कारण, सिद्धान्त न केवल विश्वासियों के रूप में एक स्वस्थ आत्मिक जीवन जीने में हमारी सहायता करते हैं परन्तु यह समझने में भी हमारी सहायता करते हैं कि वास्तव में हमारा विश्वास क्या है। सिद्धान्त मसीहियत रूपी भवन का ढाँचा है। ढाँचे के कुछ हिस्सों को हटाने से ने केवल भवन कमजोर हो जाएगा बल्कि जल्द ही उसके पूरी तरह से ध्वस्त होने का खतरा भी बढ़ जाता है।

❖ **अनिवार्य सिद्धान्त:** अत: जब विश्वास की बात आती है या विशेषत: जब सिद्धान्तों के बारे में असहमति होती है तो हम सोच के "सही" स्तर को कैसे बनाए रख सकते हैं? यदि सत्य के बारे में ही असहमति है तो हम स्वयं को परमेश्वर के सत्य से कैसे शुद्ध करेंगे?

- सबसे पहले, यह ध्यान रखना जरूरी है कि सारा सत्य महत्वपूर्ण है। दूसरा, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सारे सत्य समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं हैं। कुरिन्थियों को लिखी अपनी पत्री में पौलुस "सबसे पहले" मुद्दे के बारे में बात करते हुए (1 कुरिन्थियों 15:3–4) यह संकेत देता है कि जब सत्य की बात हो तो कुछ मुद्दे अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

- इस कारण, इन बातों (फिलिप्पियों 4:8) के बारे में सोचने वाले मसीहियों के रूप में हमारे लिए सिद्धान्तों और सही शिक्षा को जाँचने की क्षमता में बढ़ना और परिपक्व होना आवश्यक है ताकि हम मसीह की समानता में बढ़ सकें। इस उद्देश्य के लिए हम तीन प्रकार के सिद्धान्तों की पहचान कर सकते हैं:

1. **कलीसियाई जीवन के लिए अनिवार्य सिद्धान्त**

   इन सिद्धान्तों को हम "अनिवार्य सिद्धान्त" कह सकते हैं। यानि, उनके बिना न तो सुसमाचार का सन्देश है, न उद्धार और न ही कलीसिया। उदाहरण के लिए, एकेश्वरवाद, त्रिएकता, मसीह की दैवीयता, और पवित्रशास्त्र का अधिकार आदि कुछ अनिवार्य सिद्धान्त हैं। इनमें से किसी एक को भी हटाने पर मसीही कलीसिया नहीं रहेगी।

2. **कलीसियाई स्वास्थ्य के लिए सतही सिद्धान्त**

   ये सिद्धान्त व्यक्तिगत रूप से विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण हैं; ये मसीही उन्नति और विकास को प्रोत्साहित करते हैं। जैसे, बपतिस्मा, प्रभु भोज और दसवाँश आदि। ये अनिवार्य सिद्धान्तों से इस बात में अलग हैं कि यदि कोई मसीही इन सिद्धान्तों के बारे में गलत होता है तो मसीही कलीसिया के रूप में उनका अस्तित्व तो बना रहता है परन्तु आत्मिक रूप से स्वस्थ मसीही बने रहने की उनकी क्षमता कम हो सकती है।

3. **कलीसियाई कार्य के लिए सतही सिद्धान्त**

   ये सिद्धान्त व्यवहारिक सहमति और एकता के लिए महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, अन्यभाषाओं में बोलना, आराधना की शैलियाँ, और सुसमाचार प्रचार की विधियाँ। इन क्षेत्रों में बहुत से मसीहियों के विचार भिन्न हैं परन्तु भिन्न विचार के कारण वे दूसरे विश्वासी को उद्धार न पाया हुआ या गलत नहीं मानते हैं। भिन्नताओं से विवाद हो सकता है परन्तु यह समझना महत्वपूर्ण है कि एकता का अर्थ सदैव एकरूपता नहीं होता है।

- सिद्धान्तों की श्रेणी को पहचानने के द्वारा हम हमारे विश्वास के महत्व को बेहतर रूप में समझ सकते हैं। इसी प्रकार, श्रेणी के आधार पर इन सिद्धान्तों को बाँटने के बाद विश्वासी को यह निर्धारित करना चाहिए कि वह जो सिखाता है उस पर विश्वास क्यों करता है। कुछ लोग शायद किसी एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त पर विश्वास न करें क्योंकि उन्होंने कभी उसके बारे में सुना ही नहीं या वे उसे समझते नहीं हैं। गलतफहमी के कारण किसी सिद्धान्त के समर्थन या उस पर विश्वास करने में चूकना उसे स्पष्टता से अस्वीकार करने के समान नहीं है परन्तु उसका व्यक्ति के विश्वास पर नकारात्मक प्रभाव हो सकता है।

❖ **गलत शिक्षा क्या है?** किसी मुख्य सिद्धान्त को समझने से चूकना या उसे पूरी तरह से अस्वीकार करना गलत शिक्षा की ओर ले जा सकता है। गलत शिक्षा शब्द का अर्थ नकारात्मक होगा परन्तु इसका मतलब केवल ऐसे मसीही सिद्धान्त के बारे में सिखाना है जो कलीसिया द्वारा ऐतिहासिक रूप से सावधानी से जाँची और स्वीकार की गई शिक्षा के दायरे से बाहर है।

- गलत शिक्षा के विचार को एक बाड़ के रूप में समझा जा सकता है जो मसीहियों के रूप में हमारे विश्वास से जुड़े बाइबल के गहन विषयों के संबंध में बात करते समय हमारी सीमा को दिखाती है। जो भी उस बाड़ के परे है उसे गलत शिक्षा के रूप में समझा जा सकता है, यानि, इसमें ऐसे विचार और ऐसी सोच शामिल है जो कलीसिया द्वारा सदा से स्वीकार किए गए विश्वास की सीमा के बाहर हैं।

पूछें:

क्या आप एक गलत शिक्षा के उदाहरणों के बारे में सोच सकते हैं जिसका आपने या आपकी कलीसिया ने सामना किया हो?

कलीसिया के अन्दर चली आ रही शिक्षा के विपरीत 'नई' शिक्षा से सामना होने पर कलीसिया का प्रत्युत्तर क्या होना चाहिए?

सिखाएँ:

- **सिद्धान्त प्रत्येक विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण क्यों है?** हम सबका विश्वासों का एक समूह होता है परन्तु हम में से कुछ ने शायद उनकी जाँच के बारे में कभी नहीं सोचा होगा। परन्तु परमेश्वर कहीं भी हमें किसी भी शिक्षा को बिना सोच–विचार या सावधानी से जाँच किए बिना विश्वास से स्वीकार करने के लिए नहीं कहता है! सिद्धान्त के बारे में सीखने से हमें स्पष्ट रूप से यह देखने में सहायता मिलेगी कि मसीहियों के रूप में हमारा विश्वास क्या है और क्यों। सिद्धान्त को समझना कई कारणों से प्रत्येक विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण है:

  - **हमारा उद्धार परमेश्वर के सत्य पर आधारित है:** उद्धार पाने के लिए हमें एक नाम दिया गया है और परमेश्वर ने उद्धार के लिए एक ही माध्यम उपलब्ध करवाया है। (प्रेरितों 4:12) यीशु के अलावा किसी और व्यक्ति या वस्तु पर हमारा विश्वास हमें जीवन की ओर नहीं परन्तु केवल विनाश की ओर ले जाएगा। परमेश्वर के वचन में प्रकट परमेश्वर के सत्य पर विश्वास हमें मन–फिराव, नए जन्म और अनन्त जीवन की ओर ले जाता है। झूठ पर भरोसा करने से हमें कोई लाभ नहीं होता बल्कि वह हमें जीवनदायी सत्य से भटकाता है और वह हमारे अपने और दूसरों के विनाश का कारण बन सकता है। (2 पतरस 2:1; इफिसियों 2:8–9)

  - **हमारा आज्ञापालन परमेश्वर के सत्य पर आधारित है:** परमेश्वर के बारे में आपकी सोच परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते को प्रभावित करती है। परमेश्वर से प्रेम करने, परमेश्वर पर भरोसा करने और परमेश्वर की सेवा करने की आपकी योग्यता इस बात पर निर्भर है कि आप उसके बारे में क्या विश्वास करते हैं। हमारे अपने पापी स्वभाव, परमेश्वर पर हमारी निर्भरता, या हमारे बारे में परमेश्वर की अपेक्षा से संबंधित हमारे विश्वासों का परिणाम हमारी ओर से आज्ञापालन होना चाहिए। यह आज्ञापालन उन्नति के लिए आवश्यक है। (नीतिवचन 4:23; 1 यूहन्ना 4:1–3)

  - **हमारी सेवकाई परमेश्वर के सत्य पर आधारित है:** हमें यह जानकारी होनी चाहिए कि अविश्वासियों द्वारा हमारे विश्वास के बारे में पूछे जाने पर हमें क्या कहना चाहिए। हमें यह निश्चय भी होना चाहिए कि हमें जो सिखाया गया है वह परमेश्वर के वचन पर आधारित है ताकि हम दूसरों को भी सही शिक्षा दे सकें। कलीसिया का स्वास्थ्य हम से यह माँग करता है कि हम मसीही विश्वास की शिक्षाओं को वफादारी से दूसरों तक पहुँचाने में समर्थ बनें। (1 पतरस 3:15; 2 तिमुथियुस 2:15)

- **उपसंहार:** यह मॉड्यूल अनिवार्य सिद्धान्तों (जो कलीसिया के जीवन और उन्नति के लिए मुख्य रूप से महत्वपूर्ण हैं) पर ध्यान देगा। अन्य दो श्रेणियाँ भी महत्वपूर्ण हैं परन्तु अनिवार्य सिद्धान्त मुख्यतः हमारे उद्धार और इस बात से संबंधित हैं कि एक मसीही होने का क्या अर्थ है। शिष्यत्व में एक विश्वासी के रूप में बढ़ना और परिपक्व होना शामिल है और मसीही विश्वास को समझने और उनमें बढ़ने के लिए ये सिद्धान्त आवश्यक हैं। हम सबको परिपक्व बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया है "ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग–विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर–उधर घुमाए जाते हों। वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ। जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।" (इफिसियों 4:14–16)

विचार–विमर्श:

- आप एक ऐसे व्यक्ति से क्या कहेंगे जो सिद्धान्त की चर्चा में शामिल नहीं होना चाहता क्योंकि उसे 'लगता' है कि उसने उद्धार पा लिया है, वह यीशु पर ईमानदारी से विश्वास करता है और यह उसके लिए काफी है? क्या प्रत्येक मसीही के लिए यह जानना आवश्यक है कि हम क्या विश्वास करते हैं और क्यों?

- हमें अपने पूरे मन, प्राण, बुद्धि और शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करना है। सिद्धान्त का अध्ययन करने से हमें इसमें कैसे सहायता मिलती है?

- क्या आपका सामना कभी किसी ऐसे व्यक्ति से हुआ है जो एक अलग सुसमाचार का प्रचार करता था, या जो मसीही विश्वास के अनिवार्य सिद्धान्तों से असहमत था और फिर भी स्वयं को एक मसीही कहता था? आपका जवाब क्या था? ऐसे व्यक्तियों से हमारा जवाब क्या होना चाहिए?

- सच्चे सिद्धान्त की जाँच करते समय ऐतिहासिक रूप से स्वीकार किए गए मसीही विश्वासों पर विचार करना क्यों महत्वपूर्ण है?

- क्या आप कुछ कारण सोच सकते हैं (इस अध्याय में की गई चर्चा के अलावा) कि आप जो विश्वास करते हैं उसे जानना और उसकी सच्चाई को सुनिश्चित करना क्यों आवश्यक है?

प्रार्थना

प्रार्थना के साथ अध्याय को समाप्त करें। प्रार्थना करें कि आपके भागीदार अपने विश्वासों में त्रुटि से बचने के लिए तत्परता के साथ परमेश्वर के सत्य की खोज करें। स्पष्टता और गहराई से यह सोचने में उनकी सहायता करें कि परमेश्वर के सत्य कहाँ से आते हैं ताकि वे छलपूर्ण बातचीत या झूठे सुसमाचारों से आसानी से विचलित न हों।